

पैगंबर मुहम्मद के महान जीवन में पैगंबरी के संकेत (भाग 2 का भाग 1): पैगंबर मुहम्मद का प्रारंभिक जीवन

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख पैगंबर मुहम्मद उनकी पैगंबरी के सबूत](#)

श्रेणी: [लेख सबूत इस्लाम सत्य है मुहम्मद की पैगंबरी के सबूत](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2013 IslamReligion.com)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 19 Feb 2023

"पैगंबर मुहम्मद आप में से किसी के पति नहीं हैं, लेकिन वह ईश्वर के दूत और वह आखरी नबी हैं और ईश्वर को सभी बातों का ज्ञान है।" (कुरआन 33:40)

जब कोई व्यक्ति इस्लाम स्वीकार करता है, तो वह पैगंबर मुहम्मद को ईश्वर का अंतमि पैगंबर के रूप में भी स्वीकार करता है और वह इस बात की भी पुष्टि करता है कि पांच दैनिक प्रार्थनाओं में से कोई भी प्रार्थना अदा करेगा। इसके अलावा दुनिया में लगभग 1.5 अरब से भी अधिक लोग मानते हैं कि पैगंबर मुहम्मद का जीवन



अनुकरणीय और आकांक्षा के योग्य है। हालाँकि बहुत से लोग पैगंबर मुहम्मद को जाने बना ही इस्लाम को अपना लेते हैं, ईश्वर उन लोगों पर अपनी रहमत बनाए रखे। शायद वे सभी जानते हैं कि विह अरब प्रायद्वीप में पैदा हुए थे और वहीं पल बड़े और उन्होंने कुरआन के रूप में ईश्वर का शाब्दिक वचन प्राप्त किया था। निम्नलिखित दो लेखों में हम पैगंबर मुहम्मद के महान जीवन के बारे में जानेंगे। ये हमारी जानकारी को तो बढ़ाएगा ही और दिल से प्रिय करना भी सिखाएंगे। हम उसके नेक जीवन में भविष्यवक्ता को देखकर इससे सही ज्ञान प्राप्त करेंगे।

अरबी में पैगंबर (नबी) शब्द नबअ शब्द से बना है जिसका अर्थ समाचार होता है। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि एक पैगंबर ईश्वर और उसके संदेश को आम लोगों तक पहुंचता है। वे एक

अर्थ में पृथ्वी पर ईश्वर के राजदूत हैं। उनका मशिन एक ईश्वर के पूजा करने का संदेश देना है। इसमें लोगों को पूजा के लिए बुलाना, संदेश की व्याख्या करना, खुशखबरी या चेतावनी देना और राष्ट्र के मामलों का नरिदेशन करना शामिल है। सभी नबी ईमानदारी और पूरी तरह से ईश्वर के संदेश को व्यक्त करने के लिए उत्सुक थे और इसमें हमारे अंतमि पैगंबर मुहम्मद भी शामिल थे। अपने अंतमि उपदेश के दौरान पैगंबर मुहम्मद ने तीन बार सभा से पूछा कि 'मैंने ईश्वर का पूरा पैगाम आप तक पहुंचाया है कि नहीं?' आसमान की ओर इशारा करते हुए ईश्वर से सहाबा करिम (माननीय साथियों) के जवाब को अपने ईश्वर को सुनने के लिए कहा, जो जवाब एक शानदार "हाँ!" था।

साथ ही साथ एक ईश्वर को उनके आह्वान का सार, पैगंबरों की सच्चाई का एक और स्वीकृत संकेत यह है कि वे अपना जीवन कैसे जीते हैं। पैगंबर मुहम्मद के जीवन के वृत्तांत जो हमें अपने धर्मी पूर्ववर्तियों से वरिसत में मिले हैं, यह दर्शाते हैं कि हमारे नबी की भविष्यवाणी शुरू से ही ईश्वर के द्वारा नरिदेशित थी। बहुत पहले से ही पैगंबर मुहम्मद को मानव जाति को सही रास्ते पर ले जाने के लिए तैयार किया जा रहा था और उनके जीवन के अनुभवों ने उन्हें इस तरह के एक बड़ी जम्मेदारी के लिए अच्छी स्थिति में खड़ा कर दिया। फरि 40 वर्ष की आयु में जब उन्हें नबूअत प्रदान किया गया, तब भी ईश्वर ने उनके लक्ष्य का समर्थन और पुष्टिकरना जारी रखा। पैगंबर मुहम्मद के जीवन का लेखा-जोखा उनके अनुकरणीय चरित्र के उदाहरणों से भरा पड़ा है; जैसे वह दयालु, सच्चा, बहादुर, और उदार थे। वह आखरित की तैयारी कर रहे थे। पैगंबर मुहम्मद जसि तरह से अपने साथियों, परिचितों, दुश्मनों, जानवरों और यहां तक कि निरिजीव वस्तुओं के साथ व्यवहार करते थे, उसमें कोई संदेह नहीं था कि वह हमेशा ईश्वर के प्रति जागरूक थे।

पैगंबर मुहम्मद का जन्म कई तथाकथित चमत्कारी घटनाओं के साथ हुआ था और असाधारण घटनाओं की बात नसि संदेह पैगंबर के संकेत के रूप में कार्य करती थी, हालांकि हमें उन असाधारण घटनाओं में अनारक्षति रूप से विश्वास करने के बारे में सतर्क रहना चाहिए। इस्लामी इतिहास के सभी जानकारों और इतिहासकारों द्वारा सभी घटनाओं को स्वीकार नहीं किया जाता है, हालांकि वे एक असाधारण शुरुआत और अल्लाह द्वारा नरिदेशित जीवन का संकेत देते हैं, वे अलंकृत या अतिरिजित हो सकते हैं।

पैगंबर मुहम्मद के बचपन को विशेष और साधारण परिस्थितियों ने घेर लिया और नसि संदेह उनके चरित्र पर असर पड़ा। जब वह आठ साल के थे, तब उन्होंने अपने दोनों माता-पिता और अपने प्यारे दादा अब्दुल मुत्तलबि को खो दिया था। उनकी परिवारि उनके चाचा और उनके महान समर्थक अबू तालबि की देखभाल से हुई। इस प्रकार एक छोटे लड़के के रूप में भी वह पहले से ही बड़ी भावनात्मक और शारीरिक उथल-पुथल का सामना कर चुके थे। मुहम्मद के जीवन को कई इतिहासकार और कुरआन दोनों ही उनके बाधित जीवन को स्वीकार करते हैं।

क्या उसने तुम्हें (हे मुहम्मद) अनाथ नहीं पाया और तुम्हें शरण दी? (कुरआन 93:6)

मुहम्मद के चाचा अबू तालबि गरीब थे और अपने परिवार का पेट पालने के लिए संघर्ष करते थे, इसलिए अपनी कशिरावस्था के दौरान पैगंबर मुहम्मद ने एक चरवाहे के रूप में काम किया। इस व्यवसाय से उन्होंने एकांत को अपना सीखा और धैर्य, सतर्कता, देखभाल, नेतृत्व और खतरे को महसूस करने की क्षमता जैसे गुणों को विकसित किया। चरवाहा एक ऐसा पेशा था जिसके बारे में हम जानते हैं कि ईश्वर के सभी नबीयों में एक समान बात थी। '... उनके साथियों ने पूछा, "क्या आप एक चरवाहा थे?" उन्होंने उत्तर दिया, "ऐसा कोई नबी नहीं था जो चरवाहा न हो।"^[1]

अपनी कशिरावस्था में मुहम्मद कभी-कभी अबू तालबि के साथ, कारवां के साथ व्यापार केंद्रों की यात्रा करते थे। कहा जाता है कि कम से कम एक अवसर पर उन्होंने सीरिया के तरह उत्तर की ओर यात्रा की थी। पुराने व्यापारियों ने उनके चरित्र को पहचाना और उनका उपनाम अल-अमीन रखा, जिसका अर्थ होता है "जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं"। उनकी युवावस्था में भी उन्हें सच्चे और भरोसेमंद के रूप में जाना जाता था। एक कहानी जिसे अधिकांश इस्लामी विद्वानों और इतिहासकारों ने स्वीकार किया है। वह पैगंबर मुहम्मद की सीरिया की यात्राओं में से एक है।

कहानी यह है कि भिक्षु (सन्यासी बाबा) बहरि ने आने वाले नबी की भविष्यवाणी की और अबू तालबि को "अपने भतीजे की सावधानी से रक्षा करने" की सलाह दी। जीवनी लेखक इब्न इशाक के अनुसार, जिस कारवां में पैगंबर मुहम्मद यात्रा कर रहे थे, शहर के कनारे पर पहुंचे, बहरि को एक बादल दिखाई दे रहा था जो छाव करते हुए एक जवान आदमी का पीछा कर रहा था। जब कारवां कुछ पेड़ों की छाया के नीचे रुका, तो बहरि ने "बादल को देखा, तब वह पेड़ पर छाया हुआ था, और उसकी शाखाएँ ईश्वर का हुकम से झुकी हुई थीं, जब तक कि वह उसके नीचे छाया में रहे।" बहरि ने यह देखने के बाद मुहम्मद को करीब से देखा और उनसे कई ईसाई भविष्यवाणियों के बारे में कई सवाल पूछे, जिनके बारे में उन्होंने पढ़ा और सुना था।

युवा मुहम्मद अपने लोगों के बीच अपने शालीनता, सदाचारी व्यवहार और शालीन व्यवहार के लिए प्रसिद्धि थे, इस प्रकार उनके साथियों के लिए उन्हें देखना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। यहां तक कि एक युवा के रूप में भी कई साल पहले अंधविश्वासी प्रथाओं को छोड़ दिया तथा शराब पीने, पत्थर की वेदियों पर वध किए गए मांस खाने या मूर्तपूजा उत्सवों में भाग लेने से दूर रहें। जब तक वह वयस्क होते, तब तक मुहम्मद को मक्का समुदाय का सबसे विश्वसनीय और भरोसेमंद सदस्य माना जाता था। यहां तक कि जो लोग छोटे आदमियों से खुद को चिंतित रखते थे, वे भी मुहम्मद की ईमानदारी और अखंडता को स्वीकार करते थे।

मुहम्मद के गुण और अच्छे नैतिक चरित्र कम उम्र से ही स्थापित हो गए थे, और ईश्वर ने उनका समर्थन और मार्गदर्शन करना जारी रखा। जब वह 40 वर्ष के थे, तब मुहम्मद को दुनिया को बदलने तथा पूरी मानवता को लाभ पहुंचाने का साधन दिया गया था।

नमिन्लखिति लेख में हम देखेंगे कऱ पैगंबर बनने के बाद मुहम्मद का जीवन कैसे बदल गया और नषिर्ष नकाला कऱउन लोगों को वशिवास देना अनुचति है जो दावा करते हैं कऱमुहम्मद झूठे पैगंबर थे। उन्होंने आराम, धन, महानता, महमि या शक्तिप्राप्त करने के लिए पैगंबरी नहीं कऱिया।

फुटनोटः

[1]

सहीह अल-बुखारी

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/10302>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षति हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षति हैं।